24 कबीर के दोहे

कबीर
(जन्म : सन् 1398 ई. : निधन : सन् 1518 ई.)

भक्तिकालीन निर्गुण संत परंपरा में कबीर का स्थान सर्वोपरि हैं। जनश्रुति है कि कबीर की पत्नी का नाम लोई, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। तत्कालीन सामाजिक अव्यवस्था के कारण कबीर विधिवत् शिक्षा नहीं पा सके किंतु प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर पंडित हो गए थे। उन्होंने कहा है कि, ''मसिकागद छूयौ नहीं, कलम गह्यौ नहीं हाथ।'' कबीर को स्वामी रामानंद से वेदांत का, सूफी कवि शेख तकी से सूफीमत का और वैष्णव साधुओं के संपर्क में आने से अहिंसा का तत्त्व मिला। उनकी कविता अनुभव का अथाह ज्ञान भण्डार है। जीवन की सच्चाई और वाणी में विश्वास के कारण उनकी कविता हृदय के तार झनझना देती है। कबीर ने अपने युग की विसंगतियों तथा अन्तर्विरोधों को देखकर अपनी कविताओं के माध्यम से उन पर खुलकर तीखा प्रहार किया है। ''मैं कहता आखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी'' से स्पष्ट होता है कि वे जन्म से विद्रोही, समाज सुधारक, धर्म सुधारक और अपने समय के अनुरूप कवि थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में 'सधुक्कड़ी' भाषा का उपयोग किया है। जिसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, पंजाबी, पूर्वी हिन्दी, अवधी आदि कई बोलियों का मिश्रण है। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद, साखी। रमैनी और सबद ये गेय पद हैं तथा साखी में दोहे संकलित हैं।

प्रस्तुत दोहों में कबीर ने विभिन्न पहलुओं पर दृष्टिपात किया है। प्रथम दोहे में परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं, दूसरे दोहे में मुझमें जो कुछ है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है, तीसरे दोहे में जन्म सार्थक करने हेतु साधु पुरुषों की संगति करने का, चौथे दोहे में अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती हैं, पाँचवे दोहे में दुर्जनों की सज्जनों की विशेषता है, छठे में दूसरों की संपत्ति देखकर दु:खी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए, सातवें में संसार के पंच रत्न के बारे में, आठवें में बाह्याडंबर का विरोध, नौवे में सुख में भी भगवान को याद किया जाय तो दु:ख हो ही क्या?

कस्तूरी कुंडली बसै, मृग ढूँढे बन माहिं।
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखे नाहिं ॥1॥

मेरा मुझमें कछु नहीं, जो कछु हय सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपते, क्या कागेगा मेरा॥2॥

संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय।
सेवा कीजे संत की, तो जनम कृतार्थ सोय ॥3॥

एहरन की चोरी करे, करे सूई का दान।
ऊँचे चढ़कर देखते, कैतिक दूर विमान? ॥4॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥5॥

रुखा सूखा खाई कै, ठण्डा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी, मत ललचावै जीव॥6॥

कबीर! इस संसार में, पंच रत्न हैय सार।
साधु मिलन, हरिभजन, दया-दीन-उपकार ॥7॥

काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चिनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥8॥

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय॥9॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

कस्तूरी मृगनाभि से निकलनेवाला एक सुगंधित द्रव्य **कुंडली** नाभि **मृग** हरिन, हिरन **कृतार्थ** जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट, मुक्त **एहरन** निहई (एरण), लोहार का एक औज़ार **दरार** दरज **चूपडी** चूपडी हुई **सार** मुख्य, सत **दीन** नम्र, विनीत **काँकर** कंकड़ **पाथर** पत्थर **सुमिरन** स्मरण

स्वाध्याय

1. **एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ता है?
   (2) हमारा जन्म कृतार्थ करने के लिए किसकी सेवा करनी चाहिए?
   (3) भवसागर तरने के लिए कौन-कौन से पाँच तत्त्व हैं?

2. **निम्नलिखित भावार्थवाले दोहे ढूँढ़कर उनका गान कीजिए :**
   (1) परमात्मा घट-घट में व्याप्त है, फिर भी हम देख नहीं पाते हैं।
   (2) हमें जो कुछ मिला है, वह ईश्वर का ही है और वह ईश्वर को सौंपने से अपना कुछ नहीं रहता है।
   (3) अप्रामाणिक रूप से संपत्ति इकट्ठी करके उसमें से दान करने पर स्वर्गप्राप्ति नहीं हो सकती है।
   (4) दूसरों की संपत्ति देखकर दु:खी होने के बजाय ईश्वर ने हमें जो कुछ दिया है उसमें संतोष रखना चाहिए।

3. **निम्नलिखित दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :**
   (1) संत मिले सुख उपजे, दुष्ट मिले दु:ख होय।
   सेवा किजे संत की, तो जनम् कृतार्थ सोय ॥

   (2) सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
   दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥

   (3) काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
   ता चढि मुल्ला बाँग दै, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥

   (4) दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
   जो सुख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय॥

योग्यता-विस्तार

- कबीर के अन्य दोहे पढ़िए और संग्रह कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इकाई में समाविष्ट दोहों का समूहगान करवाइए।
- कबीर के उन दोहों को ढूँढ़कर पढ़िए जिनमें बाह्याडंबरों का विरोध किया गया है।
- 'कबीर आज भी प्रासंगिक है' इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए ।

●